JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मनोविष्वलेषणवादी शोध और हिन्दी उपन्यास

डॉ० सिंहेष्वर प्रसाद सिंह, हिंन्दी विभाग,
हिंन्दी विभाग, पी जी सेंटर सहरसा 852201,बिहार।
बी एन मंडल विश्रवद्यिालय मधेपुरा।

सार–

मनोविष्वलेषणवादी समीक्षा फ्रायड,युंग और एडलर के मनोदर्षन पर अधारित है। इनके अनुसार साहित्य दमित काम–वासना, हीनता और अमराकांक्षी की मर्यादित एवं कल्याणकारी रचनात्मक अभिव्यक्त है।

मन में दबी कामना अवचेतन से प्रत्यक्ष हो कर साहित्य का रूप धारण कर लेती है। इसी की समीक्षा मनोवैज्ञानिक समीक्षा में होती है। इसके अंतर्गत किसी रचना का रूप–विषेष ग्रहण करने वाले कारणों, रचनाकार के स्वाभाव, तत्कालीन परिस्थियों के प्रभाव तथा प्रेरण–स्रोत की खोज का उपक्रम करता है। इसमें बाह्य स्रोतों की उपेक्षा रचनाकार के व्यक्तिगत परिवेष को अधिक लक्ष्य किया जाता है।

धर्म, समाज और मर्यादा में भाव दमन के बाद रचनात्मक या स्वप्न के रूप व्यक्त हो कर परिष्कृत होते हैं।

एडलर हीनता से मुक्ति का माध्यम रचना को मानते हैं। मनुष्य अपनी पहचान और श्रेष्ठता के प्रदर्षन के लिए रचनात्मक जिजीविषा और अमरता की मनोवृत्ति मनुष्य में प्रमुख है जिसके कारण वह सृजन और श्रेष्ठ कर्म करता है।

मनोविष्लेषणवादी समीक्षा में उक्त प्रतिमानों के आलोक में कृति के विष्लेषण एवं मूल्यांकन होते है।

डॉ० नगेन्द्र, डॉ० देवराज, इलाचन्द्र जोषी और अज्ञेय आदि मनोवैज्ञानिक समीक्षा के मानदंडों के आलोक में कृति का विष्लेषण एवं मूल्यांकन करते हैं। ये साहित्य और कला की साधना के मूल में काम और कल्पना को स्वीकार करते हैं। कल्पना बौद्धिक नहीं, भावात्मक माध्यम है साहित्य में। मस्तिष्क और हृदय का सम्यक् समन्वय है कल्पना। यह सृजनात्मक लेखन को सार्वजनिक और सार्वदेषिक बनाती है, सौंदर्य संपन्न करती है। साहित्य मनुष्य की चित्तवृत्तियों का प्रतिबिम्ब है जिनका विष्लेषण और मूल्यांकन मनोवैज्ञानिक समीक्षा में समीक्षक करता है।

फ्रायड के समर्थक शेक्सपीयर, शेली और माइकेल अंजलि माने जाते हैं। इसमें नैतिकता और आदर्ष की अपेक्षा मनोवृत्ति और जीवन–यथार्थ की महत्ता प्रतिपादित है।

<u>शब्द–कुंजी</u> :– भाव–दमन, मनोविष्लेषण, काम, कल्पना, चित्तवृत्ति, जीवन–यथार्थ, स्वच्छंद प्रेम, मर्यादा।

परिचय

मनोविष्लेषणात्मक समीक्षा–शोध फ्रायड, युंग और एडलर के मनोदर्षन पर आधारित है। इनके अनुसार साहित्य दमित काम–वासना, हीनता और अमराकांक्षा की मर्यादित एवं कल्याणकारी रचनात्मक अभिव्यक्ति है।

मन में कामना अवचेतन से प्रत्यक्ष हो कर साहित्य का रूप धारण कर लेती है। इसी की समीक्षा मनोवैज्ञानिक समीक्षा में होती है और शोध में भी। इसके अंतर्गत समीक्षक किसी रचना का रूप–विषेष ग्रहण करने वाले कारणों, रचनाकार के स्वभाव, तत्कालीन परिस्थितियों के प्रभाव तथा अन्य प्रेरणा–स्त्रोतों की खोज का उपक्रम करता है। इसमें बाह्य स्त्रोतों की अपेक्षा रचनाकार के व्यक्तिगत परिवेष को अधिक लक्ष्य किया जाता है।

धर्म, समाज और मर्यादा में भाव दमन के बाद रचनात्मक या स्वप्न के रूप व्यक्त हो कर परिष्कृत होते हैं।

एडलर हीनता से मुक्ति का माध्यम रचना को मानते हैं। मनुष्य अपनी पहचान और श्रेष्ठता के प्रदर्षन के लिए रचनात्मक कर्म करता है। कला और साहित्य की रचना कर हीनता से मुक्ति पाता है।

युंग के अनुसार जिजीविषा और अमरता की मनोवृत्ति मनुष्य में प्रमुख है जिसके कारण वह सृजन और श्रेष्ठ कर्म करता है।

मनोविष्लेषणात्मक शोध–समीक्षा में उक्त प्रतिमानों के आलोक में कृति के विष्लेषण के साथ मानदंडों के आलोक में कृति का मूल्यांकन किया जाता है।

मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में पात्रों की मानसिक प्रवृत्तियों, दमित वासनाओं, कुंठाओं, ग्रंथियों आदि का अंकन होता है। जैनेन्द्र कुमार के परख, सुनीता, त्याग पत्र, सुखदा, विवर्त, व्यतीत, जयवर्धन आदि उपन्यासों में नारी–पुरूष के पारस्परिक आकर्षण का अंकन है। नारियों के चरित्र का अधिक प्रभावषाली एवं स्वच्छंद चित्रण किया गया है। इनके उपन्यास नायिका–प्रधान हैं। ये पति के अतिरिक्त पर पुरूष से संपर्क और स्वच्छंद प्रेम–संबंध रखती हैं, लेकिन पति के प्रति निष्ठा भी रखती है, पत्नीत्व एवं सतीत्व का अनुपालन एक साथ करती हैं। इनके उपन्यासों में भावनाओं और परिस्थितियों में समंजन नहीं है। सुनीता में घनिष्ठता बढ़ाने के लिए श्रीकांत अपनी पत्नी को मित्र के साथ अकेला छोड़ आता है। स्वच्छंद प्रेम–संबंध और यौन–समस्याएं इनके उपन्यास के मूल स्वर है। परख की समाप्ति विवाह में होती है, लेकिन त्यागपत्र की समस्या विवाह से शुरू होती है। मृणाल गृह त्याग कर कोयले वाले से संबंध स्थापित करती है। वह अभिजात्यवादी आचारवादियों के पिंजरे से उन्मुक्त है। कल्याणी में आर्थिक धरातल पर पति–पत्नी का द्वंद्व अंकित है।[1]

इलाचंद्र जोषी लज्जा, संन्यासी, पर्दे की रानी, प्रेत और छाया, निर्वासित, मुक्ति पथ, जिप्सी, सुबह के भूले, जहाज का पंछी आदि उपन्यासों में काम, अहं, दंभ, आत्महीनता की ग्रंथियों को स्वर देते हैं। इनके उपन्यासों में मनोवृत्तियों को स्वर प्राप्त है।

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय शेखर एक जीवनी, नदी के द्वीप अपने–अपने अजनबी नामक उपन्यासों में यौन–प्रवृत्तियों का अस्वाभाविक एवं सामाजिक मर्यादाओं के विपरित चित्रण करते है।[2]

डॉ० देवराज पथ की खोज बाहर–भीतर, रोड़े और पत्थर, अजय की डायरी मनोवैज्ञानिक उपन्यासों की रचना करते हैं। डॉ० धर्मवीर भारती गुनाहों का देवता और सूरज का सातवां घोड़ा नामक उपन्यासों का लेखन करते हैं। प्रभाकर माचवे द्वाभा और सांचा नामक उपन्यासों की रचना करते हैं। यादवचंद्र जैन पत्थर पानी का लेखन करते हैं। नरेष मेहता डूबते मस्तूल, गिरिधर गोपाल चांदी के खंडहर और नरोत्तम प्रसाद नागर दिन के तारे नामक उपन्यास रचते है।

इनके नायक दुर्बल, अस्वस्थ एवं कुंठाग्रस्त है और नायिकाएं स्वच्छंद एवं वासना ग्रसित हैं। इनमें अनाचार, उच्छृंखलता, यौन–पीड़ा और कुंठओं को प्राथमिकता प्राप्त है। 3

परिणाम और विष्लेषण

ये साहित्य और कला की साधना के मूल में काम और कल्पना को स्वीकार करते हैं। कल्पना बौद्धिक नहीं, भावात्मक माध्यम है साहित्य में। मस्तिष्क और हृदय का सम्यक् समन्वय है कल्पना। यह सृजनात्मक लेखन को सार्वजनिक और सार्वदेषिक बनाती है, सौंदर्य संपन्न करती है। साहित्य मनुष्य की चित्त वृत्तियों का प्रतिबिम्ब है जिनके विष्लेषण और मूल्यांकन मनोवैज्ञानिक शोध में होते हैं।

फ्रायड के समर्थक शेक्सपीयर, शेली और माइकेल अंजलि माने जाते हैं। मनोवैज्ञानिक इसमें नैतिकता और आदर्ष की अपेक्षा मनोवृत्ति और जीवन–यथार्थ की महत्ता प्रतिपादित है।

निष्कर्ष

मनोवैज्ञानिक शोध में मनुष्य की मनोवृत्तियों व्यवहारों और आचारों का विवेचन–विष्लेषण का उपक्रम होता है इसलिए मनोवैज्ञानिक उपन्यासों के केन्द्र में व्यक्ति होता है और उसकी अस्मिता को प्रमुखता प्राप्त होती है। उसके मनोवृत्तियों और व्यवहारों का मूल्यांकन–पुनर्मूल्यांकन ज्ञान के विस्तार के लिए शोध में अनवरत रूप में होते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ० बच्चन सिंह आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ 208
2. डॉ० गणपति चंद्र गुप्त हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास, खंड दो, पृष्ठ 440
3. वही पृष्ठ 440